अध्याय - 1

कब, कहाँ और कैसे

पिछली कक्षाओं में हमने यह जाना है कि अध्ययन की सुविधा के लिए इतिहास को प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक, तीन कालखण्डों में बाँटा गया है। कक्षा छह में आपने प्राचीन एवं कक्षा सात में मध्यकाल में हुए मुख्य परिवर्तनों एवं विशेषताओं के बारे में जाना। अब कक्षा आठ में हम मुख्य रूप से आधुनिक काल में हुए परिवर्तनों और उनकी जानकारी हमें जिन स्रोतों से मिलती है उनके बारे में जानेंगे। प्रत्येक काल में होने वाले परिवर्तन ही उस काल की विशेषता होती है। आप यह भी जानते हैं कि हमारी दुनिया शुरू से लेकर आज तक कभी भी स्थिर नहीं रही। यह हमलोगों के सामूहिक क्रिया कलापों के कारण हमेशा बदलती रहती है। इन बदलावों के कारण हमारे समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति, कला, संस्कृति, आदि प्रायः सभी क्षेत्रों में परिवर्तन होते रहते हैं।

© BSTBPC WEBCOPY. NOT TO BE PUBLISHED

vki d{kk Ng ,oa lkr esa पढ़ी गई बातों dk vk/kkj ij ppkZ djsa &

1- izkphu dky esa euq"; की जिन्दगी esa vkus okys izkp e[; ifjorZu D;k gksa ldrs हैं?

2- e/; काल में lkekftd vkSj jktuhfrd {ks=k esa vk, izkp e[; परिवर्तन D;k gks ldrs gSa

आधुनिक युग में भी बहुत सारे परिवर्तन हुए। ये परिवर्तन हमारे देश के साथ–साथ दुनिया के अन्य भागों में भी हुए। ये परिवर्तन कब और कैसे शुरू हुए और उन्होंने दुनिया को किस तरह प्रभावित किया, आइए इसे समझने का प्रयास करें।

iqutkZxj.k

आधुनिक युग को जन्म देने वाले अनेक परिवर्तनों की शुरूआत सबसे पहले यूरोप में हुई। पन्द्रहवीं शताब्दी में इटली में एक नया आंदोलन आरंभ हुआ, जिसे 'पुनर्जागरण' कहा

जाता है। इस आंदोलन ने लोगों को स्वतंत्र रूप से सोचने और पहले से चले आ रहे सिद्धांतों पर प्रश्न उठाने के लिए प्रेरित किया। फलतः वैज्ञानिक पद्धति का प्रसार हुआ। वैज्ञानिक पद्धति का अर्थ है प्रश्न प्रस्तुत करके प्रयोग द्वारा सत्य को जानना। प्रश्न चिह्न लगाने की इस आजादी ने लोगों को अपने ही शासकों के प्रति आवाज बुलंद करने के लिए भी प्रेरित किया। धार्मिक क्षेत्र में भी लोग अंधविश्वास पर आधारित आपत्तिजनक प्रयासों के खिलाफ आवाज उठाने लगे। व्यापार–संबंधों और अन्य सम्पर्कों के जरिए इस दृष्टिकोण का धीरे–धीरे दुनिया के अन्य भागों में भी विस्तार हुआ।

[kkst ;k=k,¡

सीमित मान्यताओं की सच्चाई जांचने के साथ–साथ इस वक्त नई चीजों को खोजने के भी काफी प्रयास किये गए। इसी समय अपने इलाके से बाहर की दुनिया के बारे में जानने का भी प्रचलन हुआ। इसके अन्तर्गत यूरोप के नाविकों और नौचालकों ने दुनिया के अन्य देशों तक पहुँचने के प्रयास शुरू किए। एशिया और अमेरिका के देशों तक पहुँचने के लिए समुद्री मार्गों की खोज भी इन्हीं प्रयासों का परिणाम थी। इन प्रयासों से यूरोप के लोग कुछ ऐसे देशों तक भी पहुंच पाये जिनके बारे में उन्हें और दुनिया के बहुत सारे लोगों को कोई जानकारी नहीं थी। आपने स्पेन के प्रसिद्ध नाविक कोलंबस के बारे में सुना होगा जिसने इसी समय 1492 ई. में अमेरिका महाद्वीप की खोज की। पुर्तगाल के नाविक वास्कोडिगामा के बारे में भी आपने सुना होगा कि उसने 1498 ई. में यूरोप से भारत तक के समुद्री मार्ग की खोज की थी। (इसके बारे में विशेष रूप से इकाई–2 में पढ़ेंगे) नये मार्गों और

fp= 1 & iRkxkfy;ks }kjk lenh jkLrs dh [kkst

fp= 2 & okLdksfMxkek

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

भू–भागों की खोज का एक परिणाम यह हुआ कि यूरोप के देशों का इन नए देशों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित हुआ।

ii thokn ,o vk|kfxd Økfr

इन व्यापारिक संबंधों से यूरोप के व्यापारियों ने बहुत लाभ कमाया। लाभ होने के कारण धीरे–धीरे इनके पास पूँजी जमा होने लगी। इस पूँजी को उन्होंने पुनः व्यापार में लगाया। इस प्रकार पंद्रहवीं शताब्दी के अन्त तक यूरोप में एक नयी सामाजिक व्यवस्था का जन्म हुआ, जिसे

fp= 3 & dkj[kkuk

'पूंजीवाद' कहते हैं। इस नयी सामाजिक व्यवस्था की मुख्य विशेषता थी पूंजीपतियों और श्रमिकों के दो नये वर्गों का उदय। पूंजीपति व्यापार के लिए तैयार होनेवाली वस्तुओं के मालिक थे और उनका मुख्य उद्देश्य था मुनाफा कमाना। श्रमिक लोग वस्तुओं का उत्पादन करते थे और पूंजीपतियों से वेतन प्राप्त करते थे। पूंजीवाद के विकास के साथ–साथ उत्पादन के तरीकों में भी परिवर्तन होने लगा। आपको याद होगा कि मध्यकाल में कपड़े जुलाहे अपने हाथों से बनाते थे। आधुनिक युग में कपड़े जुलाहे के अतिरिक्त मशीनों से भी तैयार किये जाने लगे। मशीनीकरण की यह प्रक्रिया इंग्लैड में अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में शुरू हुई और फिर धीरे–धीरे अन्य देशों में भी फैली, जिसे औद्योगिक क्रान्ति का नाम दिया गया।

mifuo'kokn ,o lkekT;okn

उद्योगों की स्थापना के कारण इन देशों में वस्तुओं का उत्पादन काफी तेजी से होने लगा। अब इन तैयार वस्तुओं को बेचने के लिए बाजार की आवश्यकता थी। साथ ही इन वस्तुओं को तैयार करने के लिए कच्चे माल की आवश्यकता भी थी। इन दोनों ही

आवश्यकताओं ने यूरोप के देशों को अपने देशों से बाहर की दुनिया में पैर फैलाने पर मजबूर कर दिया। इन देशों को लगा कि अगर वे दूसरे देशों की अर्थव्यवस्था पर काबू पा लेंगे तो उन्हें अपने उद्योगों के लिए न केवल कच्चा माल सस्ते दामों में मिलने लगेगा बल्कि उनके तैयार माल के लिए बाजार भी उपलब्ध हो जाएगा। इससे साम्राज्यवादी व्यवस्था की शुरुआत हुई। अठारहवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में शुरू हुई यह प्रक्रिया एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के अधिकांश देशों को औद्योगिक यूरोपीय देशों के आर्थिक व राजनीतिक नियंत्रण के अन्दर ले आई। इस प्रक्रिया के अन्दर शासित देश **^dkyksuh*** अर्थात् **mifuos'k** कहलाए। बड़े पैमाने पर इस प्रक्रिया को अपनाने के कारण इस युग को **^vkSifuosf'kd ;qx*** भी कहते हैं।

bUgsa Hkh tkusa

lkezkT;okn % lSfud vFkok vU; rjhds ls fons'kh Hkw&Hkkx ds izns'k dk viu v/khu dj viuk jktuhfrd izHkqRo LFkkfir djukA

vejhdh ,oa Ýkalh Økafr

दुनिया में हो रहे इन बदलावों के बीच अठारहवीं सदी के अंतिम दशकों में दो और महत्वपूर्ण बदलाव हुए। पहले का संबंध अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम से एवं दूसरे का संबंध फ्रांसिसी क्रांति से है। अमेरिका की खोज के बाद वहां पर यूरोप के देशों ने अपना कब्जा जमा लिया था। धीरे–धीरे यहां बस गए लोगों ने ही यूरोपीय देशों के शासन के खिलाफ संघर्ष शुरू किया। इसी तरह फ्रांस के लोगों ने भी राज परिवार तथा सामंत वर्ग के खिलाफ संघर्ष शुरू किया। इन दोनों ही देशों में लोगों का अत्याचार, शोषण और अन्याय के खिलाफ एकजुट होकर किया गया संघर्ष सफल रहा।

fp= 4 & mÙkjh vejhdk esa fcfV'k mifuos'kksa ds yksx ^^Lora=rk dh ?kks"k.kk** dks mRlo eukrs gq,A

© BSTBPC WEBCOPY. NOT TO BE PUBLISHED

इसके बाद इन देशों के लोगों ने अपने–अपने देशों में गणतंत्र प्रणाली की सरकार स्थापित की। स्वतंत्रता और समानता उनके मार्ग दर्शक सिद्धान्त बन गए। फ्रांस और अमेरिका के इन आन्दोलनों का कई देशों के लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इसका एक प्रभाव यह भी था कि धीरे–धीरे एक निश्चित क्षेत्र में रहनेवाले लोगों में, जो लंबे समय से एक दूसरे के साथ थे और जो एक जैसी भाषा बोलते थे, अपने को एक जैसा मानने या एक राष्ट्र के रूप में पहचाने जाने की परंपरा शुरू हुई।

vR;kpkj vkj 'kks"k.k ds f'kdkj gekjs ns'k esa fdl iadkj dh ljdkj gq\ mlds uhfr funs'kd fl)kUrks ij ppkZ djsaA

vk/kfud dky ,oa gekjk ns'k

इस प्रकार यूरोप में हुए इन परिवर्तनों से प्रभावित होकर अन्य देशों के लोगों ने नये ढंग से सोचना–विचारना शुरू कर दिया। नये उपनिवेशों की तलाश में जब यूरोपीय हमारे देश में आए तो हमारे देश पर भी इन परिवर्तनों का प्रभाव पड़ा। आपको याद होगा कि अठारहवीं सदी के शुरू में हमारा देश किस प्रकार टुकड़ों में बंटा हुआ था।

> **bUgsa Hkh tkusa**
>
> **ik;% vBkjgoha 'krkCnh ds mÙkjk)Z dks ¼1750 bZ- ds ckn½ vk/kfud dky dk izkjaHk ekuk tkrk gSA vk/kqfud 'kCn dk bLrseky tc le; ds lUnHkZ esa fd;k tkrk gS rks blds vFkZ vrhr dk lcls utnhd fgLlk tks fiNys yxHkx rhu lkS o"kksZa ls lacaf/kr gSA**

इसी समय यूरोप के व्यापारी भारत के विभिन्न भागों में व्यापार में जुटे थे। उनमें से जो व्यापारी इंग्लैंड से आए वे व्यापार करते–करते धीरे–धीरे हमारे देश के शासक बन बैठे। इन्होंने हमारे देश के स्थानीय नवाबों व राजाओं को हराकर अपना शासन स्थापित किया (इनके बारे में विस्तार से आप इकाई–2 में पढ़ेंगे।) आगे के दो सौ सालों तक हमारे देश पर इनका शासन रहा। हमारे देश में अंग्रेजी शासन आने से अंग्रेजी शिक्षा एवं नवीन विचारों का प्रवेश हुआ। फलतः भारतीय लोगों में जागृति आई। आगे की इकाइयों में आप देखेंगे कि किस प्रकार अंग्रेजों ने हमारे देश के आर्थिक संसाधनों का अपने लाभ के लिए इस्तेमाल

किया, अपनी जरूरत की चीजों को सस्ती कीमत पर खरीदा, निर्यात के लिए या अपने लाभ के लिए नई फसलों की खेती करायी। आगे आप यह भी जानेंगे कि लम्बे समय तक अंग्रेजी शासन के फलस्वरूप हमारे देश के मूल्यों, मान्यताओं, पसंद–नापसंद, रीति–रिवाज और तौर–तरीकों में महत्वपूर्ण बदलाव आए। जब एक देश पर किसी दूसरे देश के दबदबे से इस तरह के राजनीतिक, आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव आते हैं तो इस प्रक्रिया को **vkSifuosf'khdj.k** कहा जाता है और इस अवस्था को **^mifuosf'kokn*** कहते हैं।

इस काल विभाजन से अलग हटकर कुछ इतिहासकार आर्थिक तथा सामाजिक कारकों के आधार पर भी अतीत के विभिन्न कालखंडों की विशेशताएँ तय करते हैं। इसी तरह कई अंग्रेज इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास के कालखंडों को अपने नजरिये से बांटने की कोशिश की है। 1817 ई. में स्काटलैंड के अर्थशास्त्री, इतिहासकार और राजनीतिक दार्शनिक जेम्स मिल ने तीन खंडों में (हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया) ब्रिटिश भारत का इतिहास नामक एक किताब लिखी। इस किताब में उन्होंने भारत के इतिहास को हिन्दू–मुस्लिम और ब्रिटिश इन तीन काल खंडों में बांटा। यह विभाजन इस विचार पर आधारित था कि शासकों का धर्म ही एकमात्र महत्वपूर्ण ऐतिहासिक परिवर्तन होता है। कालखंडों के इस निर्धारण को उस वक्त लोगों ने मान भी लिया।

WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

D;k vki Hkkjrh; इतिहास dks le>us ds bl rjhds ls lger gSa\ d{kk esa ppkZ djsa।

जेम्स मिल को लगता था कि एशियाई देश प्रगति और सभ्यता के मामले में यूरोप से काफी पीछे थे। उनका मानना था कि भारत में अंग्रेजों के आने से पहले यहाँ हिन्दू और मुसलमान तानाशाहों का शासन था। भारत के लोग इतने पिछड़े और असभ्य थे कि अंग्रेजी शासन से ही उसका कल्याण हो सकता था। अंग्रेज भारतीयों से श्रेष्ठ और बेहतर थे। एक ओर तो वे भारतीय इतिहास को हिन्दू और मुस्लिम काल में बाँटते हैं, जबकि अपने लिए ब्रिटिश शब्द का प्रयोग करते हैं, इसाई शब्द का प्रयोग नहीं करते। ब्रिटिश शब्द से संभवतः अपनी एकता और राष्ट्रीयता का बोध कराना चाहते थे।

जरा सोचिए क्या इतिहास के किसी कालखण्ड की अवधि को 'हिन्दू' 'मुस्लिम' या 'ईसाई' दौर कहा जा सकता है? क्या किसी भी अवधि में कई तरह के धर्म एक साथ नहीं चलते? क्या किसी अवधि में अन्य धर्मों के लोगों के जीवन और तौर–तरीकों का कोई महत्व नहीं होता। हमें यह याद रखना चाहिए कि किसी भी अवधि का इतिहास किसी एक तरह के लोगों से अकेले नहीं बनता बल्कि समाज के सारे लोगों को एक साथ मिलकर साथ चलने से बनता है।

bfrgkl dk ge vyx&vyx dky[kMk e ckVu dh dkf'k'k D;k djr g\ ppk djA

bfrgkl dk tkfu,

आपने पिछली कक्षाओं में पढ़ा है कि इतिहासकार इतिहास को जानने के लिए जिन स्रोत साधनों का प्रयोग करते हैं उसे ऐतिहासिक स्रोत कहते हैं। कक्षा छह एवं कक्षा सात में भी आपने ऐतिहासिक स्रोतों के बारे में पढ़ा था। प्राचीन काल एवं मध्य काल के कुछ ऐतिहासिक स्रोतों का स्मरण करते हुए निम्न तालिका को भरने का प्रयास करें –

	ikphu dky	e/; dky
स्रोत – 1	शिला लेख	पांडुलिपि
2		
3		
4		
5		

स्मरण करें प्राचीन काल एवं मध्य काल के स्रोत तो प्रायः एक ही थे। लेकिन प्राचीन काल की तुलना में मध्य काल में स्रोतों की संख्या काफी अधिक हो गई। आपने देखा कि पुराने प्रकार के स्रोतों के अतिरिक्त मध्य काल में कुछ नए स्रोत भी सामने आए। आगे आप पायेंगे कि आधुनिक काल में इन स्रोतों की संख्या एवं विविधता में और भी वृद्धि हुई। ऐसा क्यों हुआ? आईये इसे समझने का प्रयास करें।

सातवीं कक्षा में आपने पढ़ा था कि उन्नीसवीं सदी से पहले के सालों में छापाखाने नहीं थे। लिपिक या नकलनवीस हाथ से ही पाण्डुलिपियों की प्रतिकृति बनाते थे। बाद में उन्नीसवीं सदी के मध्य तक छपाई तकनीक के माध्यम से सरकारी विभाग की कारवाईयों के दस्तावेज की कई प्रतियाँ बनाई जाने लगीं। इन महत्वपूर्ण दस्तावेजों की प्रतियों को आप आज भी अभिलेखागारों एवं पुस्तकालयों में देख सकते हैं।

अभिलेखागारों में सरकार के दस्तावेजों को सुरक्षित रखा जाता है। इन दस्तावेजों में सरकार की योजनाओं एवं 'कर' से संबंधित दस्तावेज, पुलिस एवं सी.आई.डी. रिपोर्ट, विभिन्न राजनीतिक पार्टियों की गतिविधियों के रिकार्ड, विभिन्न कमिशनों के रिकार्ड आदि शामिल होते हैं। आज भी हर जिले में एक–एक रिकार्ड रूम होते हैं। इन्हें आप भी देख सकते हैं। इनके अतिरिक्त तहसील के दफ्तर, कलेक्टरेट, कमिशनर के दफ्तर, कचहरी आदि के रिकार्ड रूम भी महत्वपूर्ण हैं।

vki viu fty d fjdkM रूम में जाकर अपने fty l lcf/kr D;k&D;k tkudkfj;k ik'त करना चाहेंगे? bu tkudkfj;k dh ,d lph cuk,A

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

इसी तरह पुस्तकालयों में वर्षों पहले के पुराने अखबार, व्यक्तिगत पत्र, डायरियां, निजी दस्तावेज आदि चीजें सुरक्षित रखी जाती हैं। महान व्यक्तियों के जीवन एवं आत्मकथा भी इतिहास के अध्ययन में उपयोगी साबित हुए हैं। इन पुस्तकों से हमें उन व्यक्तियों के बारे में विशेष जानकारी मिलती है, जिन्होंने राजनीति, प्रशासन एवं समाज सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया है। साथ ही इन पुस्तकों से हमें उस समय के समाज में हो रही विभिन्न प्रक्रियाओं के बारे में भी पता चलता है।

vkRedFkk ,o thouh d lc/k e viu f'k{kd dh lgk;rk l ppk djA

अपने देश की राजधानी दिल्ली में राष्ट्रीय अभिलेखागार, नेहरू स्मारक पुस्तकालय एवं पटना स्थित सच्चिदानन्द सिन्हा पुस्तकालय, बिहार राज्य अभिलेखागार जैसी संस्थाओं में आप जाकर इन सामग्रियों का अध्ययन कर सकते हैं। इधर हाल के दिनों में पिछली पीढ़ी के

महत्वपूर्ण व्यक्तियों के भाषण, साक्षात्कार एवं स्मृतियों की रिकार्ड रखने की परम्परा भी कुछ संग्रहालयों में शुरू की गई है।

fp= 5 & iVuk fLFkr fcgkj vfHkys[kkxkj

उन्नीसवीं सदी की शुरुआत तक पूरे देश का मानचित्र तैयार करने के लिए बड़े–बड़े सर्वेक्षण किए जाने लगे। सर्वेक्षणों में धरती की सतह, मिट्टी की गुणवत्ता, वहाँ मिलने वाले पेड़ पौधों और जीव जन्तुओं तथा स्थानीय फसलों का पता लगाया जाता था। इसके अलावा वानस्पतिक सर्वेक्षण, प्राणि वैज्ञानिक सर्वेक्षण, पुरातात्वीय सर्वेक्षण, मानवशास्त्रीय सर्वेक्षण, वन सर्वेक्षण आदि कई दूसरे सर्वेक्षण भी किए जाते थे। आज ये सारे सर्वेक्षण महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत साबित हो रहे हैं।

fp= &6 'kjhQs dk ik/kk & vxzstks }kjk cuk, x, okuLifrd m|ku vkj ikÑfrd bfrgkl ds lxgky;ks es fofHkUu ikèkks ds ueus vkj muls lcaf/kr tkudkfj;ka bDVBk dh tkrh FkhA bu ueuks ds fp= LFkkuh; dykdkjks ls cuok, tkrs FksA

उन्नीसवीं सदी के आखिर से हर दस साल में जनगणना भी की जाने लगी। जनगणना के द्वारा भारत के सभी प्रांतों में रहनेवाले लोगों की संख्या, उनका धर्म, जाति, व्यवसाय, शैक्षणिक स्तर आदि के बारे में जानकारियाँ इकट्ठी की जाती हैं। इन जानकारियों के आधार पर उनके बेहतरी के लिए भावी योजनाएँ तैयार की जाती हैं।

Hkkjr es igyh vkj vkf[kjh tux.kuk dc gbZ\ vkf[kjh tux.kuk es iNx;s dN lokyk dk viu f'k{kd dh enn ls bDVBk djs

इन सारे ऐतिहासिक स्रोतों के अलावे एक आम अनपढ़ आदमी, आदिवासी, किसान, खदानों में काम करनेवाले मजदूर, फुटपाथ पर जिंदगी गुजारने वाले गरीब क्या सोचते थे,

उनके अनुभव क्या थे, इसे जानने के लिए हमलोगों को अभी और कोशिश करनी पड़ेगी। इसके लिए हमें उस समय के कवियों और उपन्यासकारों की रचनाएँ, स्थानीय बाजारों में बिकनेवाली लोकप्रिय पुस्तकें, यात्रियों के संस्मरण आदि चीजों को टटोलना होगा। आपने महान उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद के बारे में अवश्य सुना होगा। इनकी कई रचनाएँ जैसे गबन, गोदान एवं कफन में एक सामान्य आदमी की परिस्थितियों का जिक्र है। इनकी रचनाओं में तत्कालीन समाज की तस्वीर भी देखने को मिलती है।

कुछ लोग कहानियाँ, उपन्यास एवं ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित फिल्म भी बनाते हैं। इन फिल्मों के माध्यम से हम मनोरंजन के रूप में अतीत के बारे में जानकारी हासिल करते हैं।

vxj vkiu dN dgkfu;k ,o ,frgkfld ?kVukvk पर आधारित fQYe n[kh g rk ox d{k e lkfFk;k d chp चर्चा करें।

> **djhc 200 lky igy dqe्र का आविष्कार gqvk FkkA Hkkjr e bldk bLreky 1850 b- d nkरान शुरू हुआ। exy lkekT; d vfre ckn'kkg cgknj'kkg f}rh; dk Qोटो उपलब्ध gA og igyk vkj vkf[kjh exy ckn'kkg Fkk ftl की फोटो dej l [khph xbl FkhA ,frgkfld lkr d :i e व्यक्तियों, ?kVukvk vkj oLrvk d QkVk cgr mi;kxh lkfcr gkr gA**

WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED
BSTBPC

आपने अभी तक ऐतिहासिक स्रोतों के बारे जाना। आइए कुछ ऐतिहासिक स्रोतों को विभिन्न समाचार पत्रों, सी. आई. डी. रिर्पोट, एवं पत्र के माध्यम से देखने का प्रयास करें–

fp= 7 & cgknj'kkg tQj dh dej l yh xbl rLohj

THE SEARCHLIGHT, FRIDAY APRIL 4, 1930.

PANDIT JAWAHARLAL IN BEHAR

30,000 MEN ASSEMBLE AT CHAPRA TO HEAR HIM

PARDA LADIES ACTIVE AT MOZAFFERPUR

Chapra, April, 1.

Pandit Jawaharlal Nehru arrived here this morning and was accorded a unique reception by the citizens. After halting here for half an hour he motored to the interior to address a number of meetings arranged in different places in the district. Long before his arrival the Chapra Municipal Maidan was occupied by about 30,000 men to have a glimpse of Panditji and hear the message of Satyagraha from him. Addresses

SJT. BAJRANG SAHAY'S TRIAL

Hearing Continues

(From Our Correspondent)

Hazaribagh, April, 1.

Sjt. Bajrang Sahay's case was taken up again today. Amongst those present in the court during the trial from time to time were Sreemati Saraswati Devi; Sreemati Mira Devi; [illegible]

ifMr tokgjyky ug: dk fcgkj nkjk rhl gtkj ykx Nijk e ,df=r gq,

स्रोत

31 मार्च को पंडित जवाहरलाल नेहरू छपरा से अपनी सभा की शुरूआत की। छपरा रेलवे स्टेशन पर डा० महमूद एवं करीब 400 कार्यकर्त्ताओं ने उनका स्वागत किया। 9 बजे सुबह से आस-पास के इलाकों में करीब आठ गाँवों में सभाएं की। प्रायः हर जगह लोगों से अहिंसात्मक ढंग से नमक कानून तोड़ने का आग्रह किया। 31 मार्च की रात को बेतिया के लिए रवाना हो गए। अगले दिन पहली अप्रैल को बेतिया में करीब बीस हजार लोगों की सभा को संबोधित किया। बेतिया से कार द्वारा मोतीहारी के लिए रवाना हुए। वहाँ दोपहर को करीब दस हजार लोगों की भीड़ को संबोधित किया। हर जगह लोगों ने उत्साहपूर्वक उनका स्वागत किया। अपने बिहार भ्रमण के दौरान उन्होंने सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, हाजीपुर एवं सारण जिलों में लोगों को अंग्रेजी शासन द्वारा प्रतिबंधित नमक कानून तोड़ने के लिए प्रेरित किया। 3 अप्रैल को उन्होंने सारण जिले में चौकीदारों से अंग्रेजी सेवा छोड़ने का आग्रह किया।

सी.आई.डी. विभाग की रिपोर्ट 1930 मेमो नं. 3639 (हिन्दी अनुवाद)

THE SEARCHLIGHT WEDNESDAY MARCH 26, 1930.

BEHAR PREPARES FOR STRUGGLE

RALLYING ROUND CONGRESS BANNER

(From Various Correspondents)

PT. JAWAHAR LAL NEHRU

Tour In Behar

Pandit Jawaharlal Nehru will resume his Behar tour from the 31st March.

He will reach Chapra on the 31st March and proceed to Champaran from there on the 1st April when he will deliver lectures at places fixed by the Champaran Congress Committee and meet workers and volunteers. He will go to Muzafferpur on the 2nd.

Volunteers in great numbers are enlisting their names in the Congress Committee Office.

PANDIT JAWAHAR LAL'S TOUR

Saran Programme

Pandit Jawahar Lal will arrive at Chapra at 6-15 a. m. on the 31st March.

Leaves Chapra at 8 a. m. after lunch.—

On 31st March		On 1st April	
Dighwara	A. 9 a. m.	Siwan	A. 9 a. m.
	D. 9-15 „		D. 9-30 „
Parsa	A. 9-45 „	Gopalganj	A. 10-30 „
	D. 10 „		D. 11
Amnaur	A. 10 30 „	Bathu	A. 11-15
	D. 10-40 „		D. 11 45 „
Baniapur	A. 11-30 „	Bhore	A. 12-15 p. m.
	D. 11 45		[illegible]

fury of a teacher was a young student, of the Hindu School who was turned out of his class for using the locket but subsequently, it is learnt, that the teacher responsible for this has expressed his regret. The inevitable consequence of prohibitory orders and threats was that a large number of students attended their classes with badges on. The Head Master of the Zila School called each student, one by one, out of a long list and enquired of them whether they had any connection with Congress politics. Even the hawking of Khadi and singing of national songs in meetings are prohibited and the Education Code is cited as authority for such steps. The students have boldly refused to obey such humiliating rules if any. To shake the unbending determination of the students they have been asked to consult their guardians, with a threat that they may have to chose between the locket and the school. Names of these students, who still, persist have been taken down. Guardians are naturally [illegible] worried [illegible] unnecessary [illegible] provocation. Unless the [illegible] handled [illegible] situation is apprehended.

SWAMI BHAWANI DAYAL SANYASI

Extensive Tour In Shahabad

Swami Bhawani Dayal Sanyasi with Babu [illegible] Prasad, Babu Jaiprakash Lal

dkxzl [illegible] fy, r;kj

THE SEARCHLIGHT FRIDAY APRIL 11, 1930.

SATYAGRAH IN BIHAR

CAMPAIGN IN FULL SWING IN SARAN

11 CHAUKIDARS AND ONE DAFADAR RESIGN

NARAYAN BABU GETS ONE YEARS' S. I.

Pt. Bharat Misra And Others Arrested

(... Our Correspondent)

Chapra, April 9,

...rests were made at Bareja ...pril) at about 4 30 P. M. The ...nteers arrested are ... Misra, Sakhi Chand ... Pandey. The ... Satyagrah ... waiting the... the S. I. Police ... came to the camp ... some ...ere were twelve fire *kilns* ...y, and consequently 12 *naiks* But curiously enough they ...our of them and told them ...arrested. These four Satya... ...ediately replaced by others. ...teers who were arrested on ...re sentenced yesterday to ...le imprisonments by Sub ...r of Chapra. There was ...in the city. The students ..., and Visheswar Seminary ... a body while there was a ...he Rajput School and Saran ...iderable excitement prevailed ...day.

...T GORE-KOTHI

MUZAFFARPUR TAKES FIELD

First Batch Starts, For Seohar.

SATYAGRAH TO BEGIN ON APRIL 13

(From Our Own Correspondent)

Muzaffarpur, April, 9.

Amid scenes of unprecedented enthusiasm the first batch of volunteers numbering eleven, captained by Sjt. Janakdhari Prasad, B. L,

AT MALKHACHAK

Satyagrah To be Started On 13th

Dighwara April, 9.

It has been decided to start Satyagarh by preparing salt from the earth, at Gandhi Kutir, Malkhachak, in Dighwara Thana from the 13th April next. Permission has been sought, for beginning the campaign, from Babu Rajendra Prasad, the First Servant of the province, through a special

National Wee...

The celebration of National ... this city with batches of vol... National Flag and inscripti... whole area from Digha to Be... ings were held in the even... Bhanwarpokhar and Maugh... day in the morning. ... round the mahallas ... song and meetings a... in different quarters every ... decided to hold a meeting ... during the week.

Enrolment

Enrolment of volunteers is ... briskly. After every me... enlisted and the recruits are ... the pledge at the Congress of... Committee office is kept ver... the morning to late at nigh... days above 200 volunteers ha... More men are ready t... as action is decided upon.

Collection

Thanks to the untiring ... mati Chandravati, Kumari ... Murli Manohar Prasad money ...ed. Besides volunteers are ... from door to door.

Field Of Actio...

fcgkj e lR;kxg ij mcky ij 11 pkdhnkj vkj ,d nQknkj u vxth lok l R;kxi= fn;k

WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

आज

काशी चैत्र शुक्ल १० सं० १९८७ मंगलवार सौर २५ चैत्र सं० १९८६ वै० ता० ८ अप्रैल सन १९३० ई०

महात्माजीने नमककानून तोड़ डाला !

—न रोकटोक, न पुलिस !—

बम्बई और अन्य स्थानोंमें भी सत्याग्रह ।

बम्बई और खेड़ा जिलेमें प्रमुख कार्यकर्त्ता गिरफ्तार ।

रासमें एक प्रमुख कार्यकर्त्ताको २ साल कड़ी कैद, १००) जुर्माना ।

डांडी शिविर, ६ अप्रैल ।

महात्मा गांधीने आज ठीक ८॥ बजे नमक-कानून तोड़ा । ...

महात्माजीका संदेश

सत्याग्रहकी आम इजाजत ।

मगर परिणामको समझकर ।

डांडी शिविर, ६ अप्रैल ।

काशीमें सत्याग्रह

मंगलवार ८ अप्रैलसे ...

आज

20 अप्रैल 1930

छपरा जिलेमें सत्याग्रह ।

७ कार्यकर्ताओं को सजा ।

१ दफादार और ११ चौकीदारोंके इस्तीफे ।

श्री राजेन्द्रप्रसाद गांव गांवमें नमक बनानेको कह गये ।

(संवाददाता द्वारा ।)

बरेजा (छपरा), १७ अप्रैल ।

बरेजामें नमक कर कानून तोड़नेका

आज

18 अप्रैल 1930

बिहारमें दमनचक्र ।

पटनेमें चार गिरफ्तारियां ।

चम्पारनके ११ कार्यकर्ताओंको सजा

पटना, १६ अप्रैल

पटना नगर कांग्रेस कमेटीके सभापति श्री अम्बिकाकान्त सिंह आज तीन स्वयंसेवकोंके साथ गिरफ्तार किये गये । ये लोग नमक बनानेके लिये मंगलेश तालाबको जा रहे थे । पुलिसने और दलोंको भी यह कह कर रोका कि आपलोगोंने लैसेन्स नहीं लिया है, इसलिये पुलिस कानूनका उल्लंघन कर रहे हैं ।

fofHkUu lekpkj i=ksa esa Nis lekpkjksa esa vki D;k lekurk ikrs gSa\ oxZ d{kk esa f'k{kd dh lgk;rk ls ppkZ djsaA

बिहार सत्याग्रह-समाचार

११ मई १९३० अंक-८

सारन

ताड़ी इस साल न बनने पावेगी

छपरा:— छपरे से प्राप्त समाचारों से विदित होता है कि यहां के कार्य-कर्ताओं ने ताड़ के विरुद्ध एकदम से धावा बोल दिया है। सारे थाने के ताड़ के पेड़ों के काल धड़ा-धड़ काटे जा रहे हैं। कार्य-कर्ताओं को पूरी उम्मेद है कि इस साल जिले भर में ताड़ी न बनेगी और ऐसा ताड़ न बचेगा जिससे ताड़ी चुआई जा सके। ३७

सैनिकों की भरती

मादक द्रव्य बहिष्कार और विदेशी वस्त्र बहिष्कार के लिए जिले भर में सैनिकों की भरती की जा रही है। सारे जिले में बहुत उत्साह दिखाई देता है।

सिवान, छपरा, महराजगंज और गोपालगंज में धरना देने के लिए पूरी तैयारी की जा चुकी है और चुने हुए अनुभवी आदमियों पर धरने को चलाने का उत्तर दायित्व सौंपा गया है।

सोनपुर में नमक बनाने, बहिष्कार और संगठन का काम जारी है।

मुजफ्फरपुर

मुजफ्फरपुर जिले के इस समय ७२ स्थानों में नमक बन रहा है। मादक द्रव्य बहिष्कार का काम जारी। [illegible] हो रही है।

हाजीपुर

[illegible]

दरभंगा

सैनिकों आक्रमण का अनुकरणीय सेवा कार्य

[illegible]

बिहार: ... गावों की ... — [illegible]

[illegible]

लोहरिया सराय

सब जगह हड़ताल — मुजफ्फराबाद ... [illegible]

[illegible] ... कांग्रेस का काम करेंगे।

[illegible]पुर

[illegible] 367

[illegible]

[illegible]

[illegible]पुर

[illegible]

स्रोत

वाइसराय के नाम गांधीजी का पत्र

सत्याग्रह आश्रम, साबरमती
२ मार्च १६३०

प्रिय मित्र,

निवेदन है कि इसके पहले कि मैं सविनय कानून भंग शुरू करूँ और शुरू करने पर जिस जोखिम को उठाने के लिए मैं इतने सालों से हिचकिचाता रहा हूँ, उसे उठाऊँ, इस उम्मीद से मैं आपको यह पत्र लिखने जा रहा हूँ कि अगर समझौते का कोई रास्ता निकल सकें तो उसके लिए कोशिश कर देखें।

अंहिसा में मेरा विश्वास तो जाहिर ही है। जानबुझ कर मैं किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं कर सकता, तो फिर मनुष्य-हिंसा की तो बात ही क्या है? फिर भले ही उन मनुष्यों ने मेरा या जिन्हें मैं अपना समझता हूँ उनका, बड़े से बड़ा अहित ही क्यों न किया हो। इसलिए जो भी अंग्रेजी सल्तनत को मैं एक बला मानता है, तो भी मैं यह कभी नहीं चाहता कि एक भी अंग्रेज को या भारत में उपार्जित उसके एक भी उचित हित को, किसी तरह का नुकसान पहुँचे।

तो फिर मैं किस कारण अंग्रेजी राज्य को शापरूप मानता हूँ? कारण ये हैः इस राज्य ने एक ऐसा तंत्र खड़ा कर लिया है कि जिसकी वजह से मुल्क हमेशा के लिए बढ़ते हुए परिणाम में बराबर चूसा जाता रहे; अलावा इसके, इस तंत्र का फौजी और दीवानी खर्च इतनी ज्यादा तबाही करने वाला है कि मुल्क उसे निकाले।

अगर आप न सुनेंगे तो-

लेकिन अगर ऊपर लिखी बुराइयों को दूर करने का कोई इलाज आप ढूँढ निकालेंगे और मेरे इस खत का आप पर कोई असर न होगा, तो इस महीने की ग्यारहवीं तारीख को मैं अपने आश्रम के जितने साथियों को ले जा सकूँगा उतने साथियों के साथ नमक संबंधी कानून को तोड़ने के लिए कदम बढ़ाऊँगा । गरीबों के दृष्टिबिन्दु से यह कानून मुझे सबसे ज्यादा अन्यायपूर्ण मालूम हुआ है। आजादी की यह लड़ाई खास कर देश के गरीब से गरीब लोगों के लिए है। अतः यह लड़ाई इस अन्याय के विरोध से ही शुरू की जायगी।

ऑल इंडिया कांग्रेस कमिटी - जी.-२६/१६३० (हिन्दी अनुवाद)

Developed by: SOL www.absol.in

le; d: lkFk ifjor'u

कक्षा सात में हमलोगों ने पढ़ा था कि समय के साथ हमारे समाज में अनेक परिवर्तन होते रहते हैं। ये परिवर्तन कभी शब्दों के अर्थ, कभी स्थानों के नाम, कभी भौगोलिक सीमाओं एवं जीवन शैली के संदर्भ में होते रहते हैं।

भारतीय उपमहाद्वीप में आधुनिक भारत, बांग्लादेश, नेपाल, पाकिस्तान, भूटान और मालदीव सम्मिलित हैं। इनमें भारत, पाकिस्तान तथा बांग्लादेश अंग्रेजों के भारतीय साम्राज्य के अभिन्न अंग थे। म्यामांर (तत्कालीन बर्मा) तथा श्रीलंका (तत्कालीन सीलोन) भी 1937 ई. तक अंग्रेजों के एशियाई साम्राज्य के अंग थे। स्वतंत्रता के बाद हमारा देश हिन्दुस्तान दो भागों में विभाजित हो गया। बलुचिस्तान, सिंध, पश्चिमी पंजाब एवं पूर्वी बंगाल पाकिस्तान में चले गए। बाद में पाकिस्तान का पूर्वी हिस्सा अलग होकर बांग्लादेश के नाम से स्वतंत्र देश बना। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में बिहार एवं उड़ीसा बंगाल प्रांत के अंग थे। 1912 ई. में बिहार एवं उड़ीसा को बंगाल से अलग कर एक नये प्रांत के रूप में संगठित किया गया। 1936 में उड़ीसा को बिहार से अलग कर, दोनों को अलग प्रांत का दर्जा दिया गया। पुनः 15 नवम्बर 2000 को बिहार से उसके, दक्षिण पठारी क्षेत्र को अलग कर पृथक झारखंड राज्य गठित हुआ।

oÙkeku fcgkj

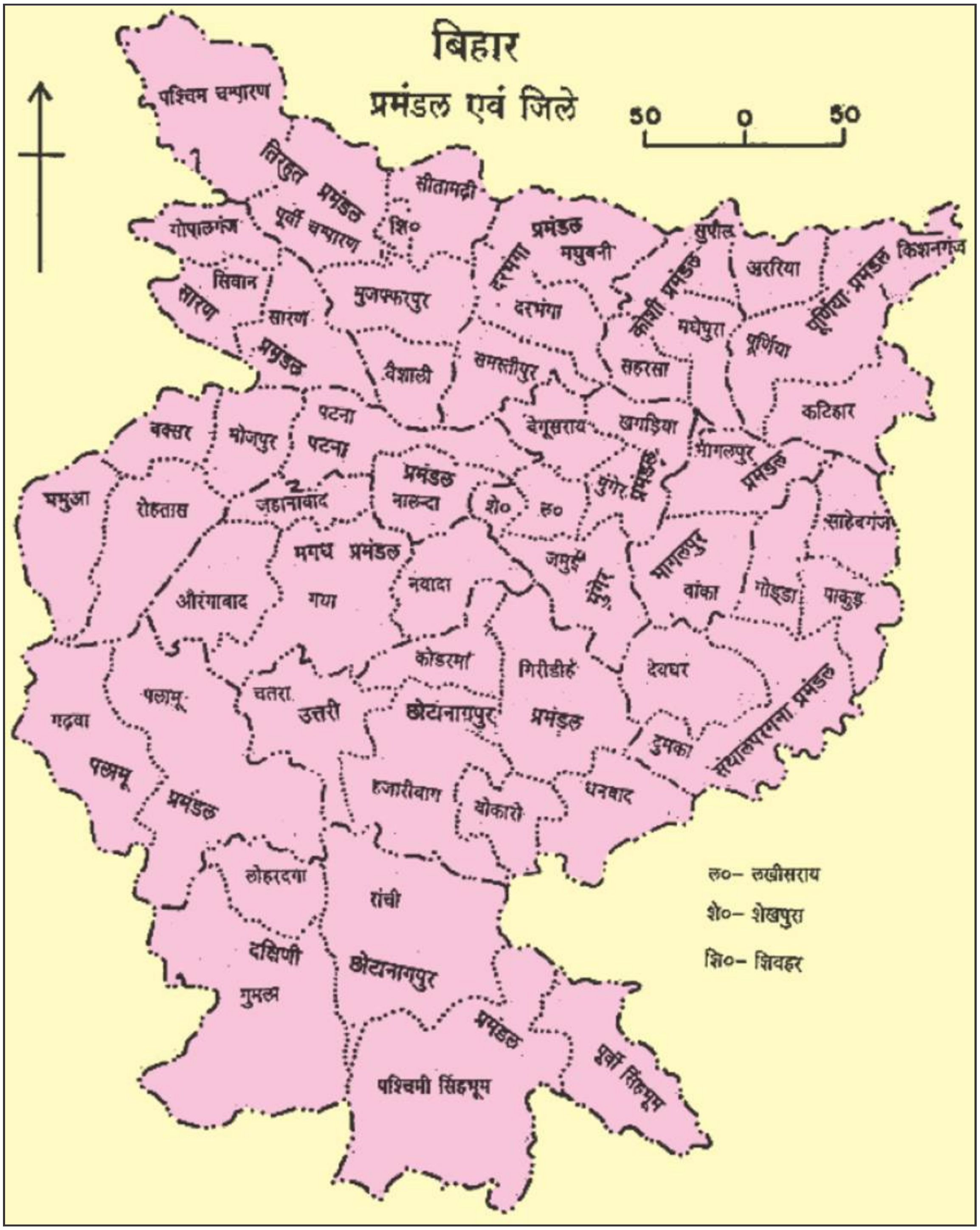

foHkktu ds iw0 fcgkj

Developed by: SOL www.absol.in

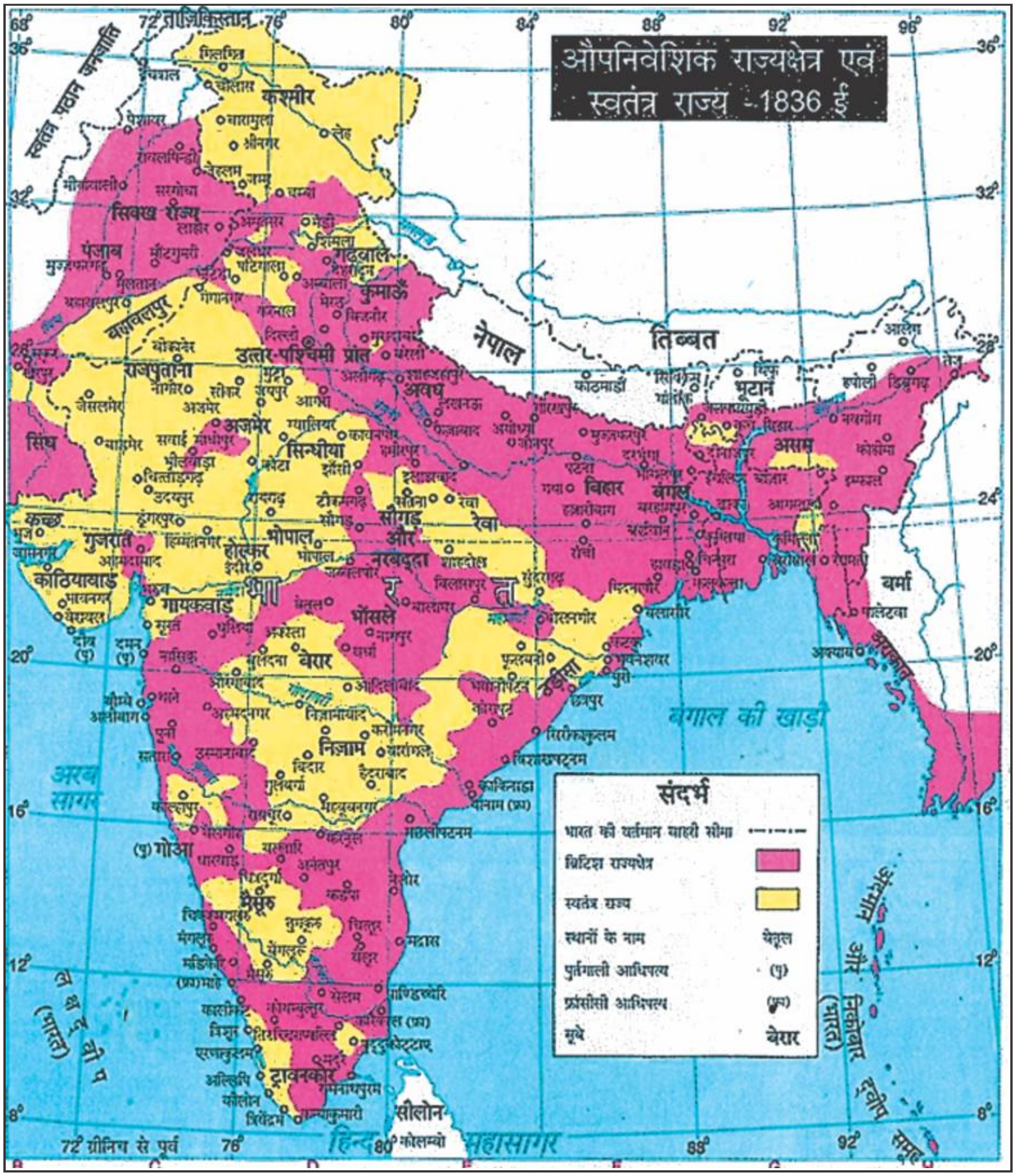

vk tknh d s igy s dk Hkkjr

oÙkeku Hkkjr

xfrfof/k & Hkkjr ,o fcgkj dk fn;s x, bu pkj vyx&vyx ekufp=k l s vkidk fdl izdkj dh tkudkjh izkIr gks jgh gS\ lkp dj crk,¡

vH;kl

vkb, fQj ls ;kn djsa&

1- fjDr LFkkuksa dks Hkfj,A

(क) पूँजीपतियों का मुख्य उद्देश्य था अधिक से अधिक .... कमाना।

(ख) पंद्रहवीं शताब्दी में एक नये आंदोलन की शुरूआत हुई जिसे .... कहते हैं।

(ग) मशीनों से वस्तुओं के उत्पादन की प्रक्रिया को .... क्रांति कहते हैं।

(घ) .... में सरकारी दस्तावेजों को सुरक्षित रखा जाता है।

(ङ) समय के साथ देश और राज्य की .... सीमाओं में परिवर्तन होते रहते हैं।

2- lgh vkSj xyr crkb,A

(क) वैज्ञानिक पद्धति का अर्थ है प्रश्न प्रस्तुत कर प्रयोग द्वारा ज्ञान प्राप्त करना।

(ख) अंग्रेज इतिहासकार जेम्स मिल का भारतीय इतिहास का धर्म के आधार पर बांटना उचित था।

(ग) अमरीकी स्वतंत्रता संग्राम के बाद वहाँ के लोगों ने गणतंत्र प्रणाली की शुरूआत नहीं की।

(घ) ऐतिहासिक स्रोतों से एक आम आदमी के बारे में भी जानकारी मिलती है।

(ङ) आजादी के पहले हमारे देश की जो भौगोलिक सीमा थी, आजादी के बाद भी वही रह गई।

vkb, fopkj djsa&

(I) मध्यकाल और आधुनिक काल के ऐतिहासिक स्रोतों में आप क्या फर्क पाते हैं। उदाहरण सहित लिखिए।

(ii) जेम्स मिल ने भारतीय इतिहास को जिस प्रकार काल खंडो में बांटा, उससे आप कहाँ तक सहमत हैं।

(iii) सरकारी दस्तावेजों को हम कैसे और कहाँ–कहाँ सुरक्षित रख सकते हैं।

(iv) यूरोप में हुए परिवर्त्तन किस प्रकार आधुनिक काल के निर्माण में सहायक हुए।

vkb, djds n[ksa %&

(I) भारत में पहली और आखिरी जनगणना कब हुई पता करें? इसके द्वारा कुछ ऐसे तथ्यों एवं सूचनाओं का संकलन करें जिसका उपयोग हम ऐतिहासिक स्रोत के रूप में कर सकें।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

Developed by: ABSOL www.absol.in